अब्दुल-बहा

की

वसीयत

और

इच्छापत्र

प्रथम खण्ड

समस्त स्तुति हो 'उसकी' जिसने अपनी संविदा की ढाल से अपने धर्म के मन्दिर को सन्देह के बाणों से सुरक्षित रखा है, जिसने 'अपनी वसीयत के स्वर्ग-सहचरों' द्वारा अपने 'परम कल्याणमय विधान के आश्रयस्थल' को संरक्षित कर रखा है और अपने 'सीधे एवं प्रकाशमान मार्ग' की रक्षा की है, जिससे उन संविदाभंजकों के समूह के आक्रमणों को झेला जा सका; जिन्होंने उसके दिव्य भवन को ध्वस्त करने की धमकी दी थी, जिसने अपने 'शक्तिशाली दुर्ग' और 'सर्वमहिमामय धर्म' की देखभाल उन मनुष्यों की सहायता से की जिन्हें कलंकित करने वालों के कलंक का प्रभाव नहीं छूता और जिन्हें कोई भी सांसारिक व्यवसाय, किसी भी गरिमा या सत्ता का लोभ उस परमेश्वर की संविदा और उसके इच्छापत्र से विमुख नहीं कर सकता जो परमेश्वर के द्वारा स्थापित की गई है और उसकी सर्वमहिमामयी लेखनी से स्पष्ट और प्रकट वचनों में प्रकटित है तथा उसकी 'सुरक्षित पाती' में अंकित है।

नमन एवं स्तुति, आशीर्वाद और महिमा उस दिव्य और पावन कल्पवृक्ष की! वह उस आदि शाखा पर विराजती है, जो युगल पावन महावृक्षों से अंकुरित है, जो धन्य और कोमल है, जो पुष्पित-पल्लवित है, जो अमूल्य मोती है, विलक्षण, अनूठा, युगल, उत्ताल महासागर के बीच से जो जगमगाया है। पावनता के वृक्ष की प्रशाखाओं पर, स्वर्गिक वृक्ष की टहनियों पर जो 'महान विभाजन के युग' में संविदा में दृढ़ बने रहे, धर्मभुजाओं पर जिन्होंने दूर-दूर तक दिव्य सुरभि फैलाई, ईश्वर के प्रमाणों की घोषणा की, 'उसके' धर्म का प्रसार किया, विदेशों में 'उसके' विधानों को प्रकाशित किया, 'उसके' सिवा अन्य सब कुछ से स्वयं को अनासक्त कर लिया, इस संसार में धर्म के लिए खड़े हुए और ईश्वर के सेवकों के हृदय और आत्मा में दिव्य प्रेम की ज्योति प्रज्वलित की, उन पर जो उसकी संविदा में आस्थावान रहे और जिन्होंने उस 'प्रकाश' का अनुसरण किया जो मेरे स्वर्गवास के बाद 'दिव्य मार्गदर्शन के प्रभात' से जगमगाता है, क्योंकि, देखों, वह युगल पावन महावृक्षों की पावन शाखा है। कल्याण हो उसका जो सम्पूर्ण मानवजाति को अच्छादित करने वाली उसकी छाँव का आश्रय खोज रहा है।

हे तुम स्वामी के प्रिय जनो! सभी कार्यों में सर्वाधिक महान कार्य है ईश्वर के सत्य धर्म की रक्षा करना, उसके विधानों को सुरक्षित रखना, उसके धर्म की संरक्षा और उसकी वाणी की सेवा। दस हजार आत्माओं ने इस धर्म की राह पर अपने खून की धाराएँ प्रवाहित कर दीं, अपना बहुमूल्य जीवन इसके लिए बलिदान कर दिया, पावन आनन्द से मोहित वे शहादत की महिमामयी भूमि की और शीघ्रता से बढ़ चले, ईश्वर के धर्म की ध्वजा को ऊँचा उठाया, अपने जीवनरक्त से संसार की पाती पर उसकी दिव्य एकता के श्लोक लिख दिये, परम उदात्त उस पावन का सीना विपदाओं के तीरों का लक्षय बना, मेरा जीवन उसके प्रिय जनों के लिए बलिदान हो जाये! माजिदरान में आभा के सौन्दर्य के आशीर्वाद चरणों पर इतने भयंकर रूप से कोड़े बरसाये गये कि उनसे रक्त बहने लगा और वे बुरी तरह छिल गये। उनकी गर्दन

भी कैद की जंजीरों में डाल दी गई और उनके पैरों को मजबूती से बेड़ियों में जकड़ दिया गया। 50 वर्षों की अवधि तक हर पल उन्हें नए-नए संकट और कष्ट मिलते रहे और नई-नई पीड़ाओं और चिंताओं से वे घिरे रहे। ऐसी ही एक पीड़ा थी कि अनेक उतार-चढ़ाव की स्थितियों से गुजरने के बाद उन्हें बेघर और बंजारा बना दिया गया और वे और भी नई विपत्तियों और कठिनाइयों के शिकार बने। ईराक में विश्व के इस सूर्य को घृणित लोगों के छल-कपट का ऐसा शिकार बनना पड़ा कि मानों उनकी आभा को ही ग्रहण लग गया। बाद में उन्हें महान नगर (कॉन्सटैंटिनोपल) और उसके बाद रहस्यभूमि (एड्रियोनापल) में निर्वासित किया गया और जहाँ से घोर रूप से प्रवंचित करके उन्हें अन्ततः महानतम कारागार के नगर (अक्का) में भेज दिया गया। वह विश्व का प्रवंचित; मेरा जीवन उनके प्रियजनों के लिए बलिदान हो जाये! चार बार, एक से दूसरे नगर-नगर में निष्कासित किये गये जब तक अंततः उन्हें इस स्थायी कारावास में नहीं डाल दिया गया। उन्हें उस कारावास में डाल दिया गया जो डकैतों, लुटेरों और कातिलों के लिए था। यह सब उन अनेक कष्टों में से एक था जो पावन सौन्दर्य को झेलने पड़े। बाकी के कष्ट भी ऐसे ही भंयकर थे।

उनकी विपत्तियों में एक ओर था मिर्ज़ा याह्‌या की शत्रुता, घोर अन्याय, पक्षपात और विद्रोह। यद्‌यपि इस प्रवंचित कैदी ने उसे बाल्यावस्था से ही अपनी ममतामयी दयालुता से अपने हृदय से लगाकर उसका पोषण किया था, हर पल उस पर अपनी मृदुल कृपा की वर्षा की थी, उसकी प्रशंसा की थी, हर दुर्भाग्य से उसकी रक्षा की थी, उसे इस लोक और परलोक के निवासियों का प्रिय बनया था। परम पावन, परम उदात्त (बाब) के उपदेशों और उनकी सलाहों और उनकी इस स्पष्ट निर्णायक चेतावनी के बावजूद कि सावधान! कहीं उन्नीस जीविताक्षर या जो भी बयान में प्रकट किया गया है वह तुम्हारे लिए पर्दा न बन जाये। इसे समझते हुए मिर्ज़ा याह्‌या ने उन्हें अस्वीकार किया, उसके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया, उनमें विश्वास नहीं किया, शंका के बीज बोये, उनके प्रकटित श्लोकों से आँखें फेर लीं और उनसे विमुख हो गया। काश! वह इतने पर भी संतुष्ट हो जाता, लेकिन नहीं, उसने बहाउल्लाह का पवित्र रक्त तक बहाने की भी कोशिशें की और ढ़िढ़ोरा पीटा कि बहाउल्लाह ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया है और निर्दयता बरती है। ऐसा विद्रोह मचाया उसने और रहस्यभूमि में उपद्रवों की ऐसी आँधी खड़ी कर दी कि विश्व-सूर्य को इस महानतम् कारावास में निर्वासित कर दिया गया और उन्हें घोर प्रवंचना का शिकार होना पड़ा। इसी महान कैद के पश्चिम में वे अस्तगत हुए।

हे तुम संविदा में दृढ़ और अटल रहने वालों! विद्रोह का केन्द्र, उपद्रवों का मूल संचालक मिर्ज़ा मुहम्मद अली प्रभुधर्म की छाया से परे हट गया। उसने संविदा को तोड़ा, पवित्र लेखों को झुठलाया। ईश्वर के धर्म को उसने गम्भीर क्षति पहुँचाई, बहाउल्लाह के अनुयायियों को तितर-बितर कर दिया। गहन द्‌वेष से उत्तेजित होकर उसने अब्दुल-बहा को हानि पहुँचाने की कुचेष्टा की और घोर शत्रुता के वशीभूत उसने देहरी के इस सेवक पर आक्रमण किया। एक-एक तीर को चुन-चुनकर उसने इस प्रवंचित सेवक की छाती

को बेधने का प्रयास कियास, मुझ पर कोई भी गहरा घाव करने से वह बाज़ नहीं आया और शायद ही कोई ज़हर बचा हो जो उसने इस अभागे के जीवन में नहीं घोला। मैं सौगंध लेता हूँ परम पावन आभा सौन्दर्य की और उन पावन परम उदात्त से प्रकाशित प्रकाश की (मेरा जीवन उनके विनीत सेवकों के लिए बलिदान हो जाये) कि इस अन्याय के कारण आभालोक के मंडप के निवासी बिलख उठे हैं, स्वर्गिक देवदूतों का समूह विलाप कर उठा हैं और देवदूतगण आहें भरते हुए कराह उठे हैं। इस दुष्ट व्यक्ति के दुष्कर्म इतने भयंकर हो गये कि उसने अपनी कुल्हाड़ी से आशीर्वादित वृक्ष की जड़ पर ही गहरी चोट की, प्रभुधर्म के मंदिर पर घोर प्रहार किया, आशीर्वादित सौन्दर्य के प्रियजनों की आँखों से खून के आँसू बह आये, एकमेव सत्य परमेश्वर के शत्रुओं को कष्ट दिया, उनका उत्साह घटाया, संविदा की अपनिन्दा करके सत्य के अनेक अन्वेषकों को प्रभुधर्म से विमुख किया, याह्या की विफल उम्मीदों को फिर से जगा दिया, स्वयं को घृणित बनाया, महानतम नाम के शत्रुओं को दुस्साहसी और अहंकारी बनाया अटल और निर्णायक उपसंहारात्मक श्लोकों को एक ओर करके संदेह के बीज बोये। यद्यपि वह था कुपात्र किन्तु पुरातन सौन्दर्य की प्रतिज्ञापित सहायता कृपापूर्वक हर क्षण उसको प्रदान की गई। अवश्य ही उसने प्रभुधर्म को नष्ट कर दिया होता बल्कि उसे जड़ से उखाड़ दिया होता और दिव्य भवन को बुरी तरह ध्वस्त कर दिया होता, लेकिन परमेश्वर की जय हो, आभालोक की विजयी सहायता प्राप्त हुई। प्रभुलोक की सेनाओं ने तीव्रता से आकर विजय प्रदान की, प्रभुधर्म दूर-दूर तक फैला, एकमेव सत्य परमेश्वर का आह्वान विदेशों में गुंजरित हुआ। सभी क्षेत्रों के लोगों के कान ईश्वर की वाणी सुनने को उत्सुक हुए। उसकी ध्वजा लहराई, पावनता की पताका बड़ी शान से फहरा उठी और उसकी दिव्य एकता की प्रशंसा के श्लोक गाये गये। अब जबकि ईश्वर के सत्य धर्म का बचाव और उसकी सुरक्षा होनी चाहिए, उसके विधान और प्रभुधर्म की रक्षित और संरक्षित किया जाना चाहिए तो यह हर किसी के लिए अनिवार्य है कि वह इस स्पष्ट और सुदृढ़ रूप से स्थापित आशीर्वादित श्लोक के पाठ्य से दृढ़ता से जुड़ा रहे जो उसके मिर्ज़ा मुहम्मद अली के विषय में प्रकट किया गया है। इससे अधिक महान अपराध की कल्पना भी नहीं की जा सकती ऐसा वे (बहाउल्लाह) अपनी महिमामय और पवित्र वचनों में कहते हैं: मेरे मूर्ख प्रिय जनों ने उसे मेरा साझेदार तक समझा। देश में विद्रोह की चिंगारी लगाई और वे वस्तुतः उपद्रवी हैं। सोचो, कितने मूर्ख हैं वे लोग जो उनके (बहाउल्लाह) सान्निध्य में रहे और उनके मुखारबिन्द के दर्शन किये फिर भी ऐसी अनेकों बातें विदेशों में फैलाई। उनकी स्पष्ट वाणी का गुणगान हो ”यदि कोई क्षण भर के लिए भी प्रभुधर्म की छत्रछाया से दूर होगा तो वह नष्ट हो जायेगा।“ विचार करो कि क्षणमात्र के लिए भी विचलित न होने पर उन्होंने कितना जोर दिया है अर्थात यदि कोई एक केश जितनी चौड़ाई मात्र की अवधि के लिये भी प्रभुधर्म की छत्रछाया से जरा भी दायें-बायें को भटका तो उसका विचलित होना स्थापित हो जायेगा और उसकी पूर्ण तुच्छता स्वयं प्रदर्शित हो जायेगी एवं अब तुम इसके साक्षी हो कि किस प्रकार ईश्वर का कोप उस पर (मुहम्मद अली) पर चारों ओर से टूट पड़ा है और किस प्रकार दिन पर दिन वह तेजी से

विनाश की ओर बढ़ रहा है। शीघ्र ही तुम उसे और उसके सहयोगियों को अंदर और बाहर दोनों तरह से विनाश द्वारा दण्डित पाओगे।

ईश्वर की संविदा को तोड़ने से बढ़कर और कौन सी पथभ्रष्टता हो सकती है? पवित्र लेखनी के श्लोकों की झूठी व्याख्या और उसमें कपट भरे क्षेपक जोड़ने से बढ़कर और कौन सी पथभ्रष्टता हो सकती है जैसा कि मिर्ज़ा बदीउल्लाह ने प्रमाणित और घोषित किया। साक्षात संविदा के केन्द्र को अनिन्दित करने से बढ़कर भला और कौन सी पथभ्रष्टता हो सकती है? इससे अधिक घोर पथभ्रष्टता क्या हो सकती है कि इस पवित्र शोक की आड़ में 'संविदा के केन्द्र' को मौत की आज्ञा सुना दी जाए: "जो कोई भी पूरे हजार वर्षों की परिसमाप्ति से पूर्ण.......दावा करता है....।" जबकि मुहम्मद अली ने धृष्टतापूर्वक पवित्र सौन्दर्य के जीवनकाल में ही ऐसा दावा किया था। उसका दावा अपने मूलरूप में उसकी हस्तलिपि में उसके हस्ताक्षर एवं मुहर सहित उपलब्ध है। इस दावे के खण्डन के लिए ही उपरोक्त पवित्र श्लोक प्रकट किया गया था। ईश्वर के प्रियजनों पर झूठा आरोप लगाने जैसी पूर्ण पथभ्रष्टता और क्या हो सकती है, उन्हें कैद दिलाने से घृणित और कौन सा अत्याचार हो सकता है? ईश्वरी लेखों एवं पाठ्यों को सरकार तक इस आशा में पहुँचाना कि सरकार इससे सजग हो जाये और इस प्रवंचित, अन्याय पीड़ित के खून की प्यासी हो जाये इससे बड़ी पथभ्रष्टता भला क्या हो सकती है? ईश्वर के धर्म को नष्ट करने एवं बदनाम करने के लिऐ झूठे एवं जाली पत्र और दस्तावेज बनाना ताकि सरकार भयभीत एवं बेचैन होकर इस प्रवंचित का कत्ल कर दे, इससे अधिक हिंसापूर्ण पथभ्रष्टता और क्या हो सकती है? ये पत्र और दस्तावेज अभी तक सरकार के पास उपलब्ध हैं। उसके अन्याय और विद्रोह से घिनौना और कौन सा अत्याचार हो सकता है? मुक्ति के आकांक्षियों की सभा को भंग करने से बढ़कर लज्जाजनक और कौन सा अत्याचार हो सकता है? शंकालु लोगों की दुर्बल और व्यर्थ-व्याख्याओं से बढ़कर और अधिक घृणित अत्याचार क्या हो सकता है? अपरिचितों एवं ईश्वर के शत्रुओं के साथ जुड़ने से बढ़कर दृष्टतापूर्ण पथभ्रष्टता और क्या हो सकती है?

कुछ महीने पहले, कुछ सहयोगियों के साथ मिलकर, जिसने संविदा को तोड़ा था उसने झूठे अभियोगों एवं निंदापूर्ण आरोपों से भर एक दस्तावेज तैयार किया। ईश्वर क्षमा करे! उन आरोपों में से एक आरोप यह था कि अब्दुल-बहा शाह के घोर शत्रु और बुरा चाहने वाले हैं। इन आरोपों ने शाही सरकार को बहुत बेचैन कर दिया। अन्ततः राजधानी से एक जाँच आयोग भेजा गया जिसने राजदरबार की उचित मर्यादाओं का उल्लघंन करते हुए अन्यायपूर्ण रवैये से जाँच-पड़ताल की। उस एकमेव सत्य ईश्वर के शत्रुओं ने आयोग के सदस्यों की आँख बन्द कर उनकी बात मान ली। उनके आरोंपों में एक यह था कि इस सेवक ने इस शहर में अपना एक अलग झंडा फहराया है और लोगों को इसके नीचे आने का आहवान किया है और उन्हें स्वयं के प्रति आज्ञाकारी बनाया है, इस्लाम में दरार डाली है। ईसा के अनुयायियों से

एक समझौता किया है और ईश्वर न करे, महाराजाधिराज की महान शक्ति को गम्भीर क्षति पहुँचानी चाही है। इन दुष्टता भरे आरोपों से भगवान हमें सुरक्षित रखें।

ईश्वर के सीधे एवं पवित्र आदेश के अनुसार हमें निंदा करने का निषेध है - तथा प्रेम और एकता का व्यवहार प्रदर्शित करने का आदेश है एवं विश्व के सभी लोगों के साथ सदाचार स्पष्ट एवं सद्भाव में रहने का सुदपदेश दिया है। हमें अपने देश की सरकार का आज्ञापालन करना एवं उनका शुभचिंतक बनना चाहिए। न्यायनिष्ठ राजा के प्रति निष्ठा जताना स्वयं ईश्वर के प्रति अनिष्ठा एवं सरकार की बुराई करना स्वयं ईश्वर के धर्म का उल्लघंन करना समझना चाहिए। इस अंतिम और निर्णायक शब्दों के बाद क्या ये कैदी ऐसी व्यर्थ कल्पनाओं में लिप्त हो सकते हैं? कैद में रहते हुए भला वे कैसे ऐसी निष्ठाहीनता का प्रदर्शन कर सकते हैं। आह! जाँच आयोग ने मेरे भाई और शत्रुओं के इन सभी आरोंपों को सत्य मान कर इनका अनुमोदन किया और उन्हें महाराजधिराज के समक्ष प्रस्तुत किया। अब इस क्षण इस कैदी के चारों ओर एक भयानक आँधी चल रही है जो महाराज की कृपापूर्ण आज्ञा की, चाहे वह अनुकूल हो या प्रतिकूल, प्रतीक्षा कर रहा है, ईश्वर अपनी दया से उसे न्यायनिष्ट होने में सहयोग करें, चाहे निर्णय कुछ भी हो। अब्दुल-बहा पूरी शांति और धीरता से ईश्वर की इच्छा के प्रति पूर्णतया अधीन घिनौना, निकृष्ट, दुष्टतापूर्ण भला और कौन सा अत्याचार हो सकता है।

इस प्रकार के केन्द्र ने अब्दुल-बहा को मरवाना चाहा और इसकी साक्षी के रूप में स्वयं शुजाउल्लाह की लिखित गवाही है जो यहाँ संलग्न हैं यह बात स्पष्ट और निर्विवाद है कि वे गुप्त रूप से एवं अत्याधिक कुशलतापूर्णक मेंरे विरूद्ध षडयंत्र रच रहे हैं। इस पत्र में उसने निम्नलिखित शब्द लिखें हैं: मैं हर क्षण श्राप देता हूँ उसे जिसने यह फूट डाली, जो इन शब्दों में श्रापित है - ”ईश्वर उस पर दया मत कर! और मैं आशा करता हूँ कि ईश्वर शीघ्र ही उसे उत्पन्न करेगा जो उस पर दया नहीं करेगा, जो अभी दूसरे वेश में है और जिसके विषय में मैं अभी अधिक नहीं बता सकता।“ उसने इस पवित्र श्लोक की ओर निर्देश दिया है जो इन शब्दों से शुरू होता है: ”वह जो पूरे हजार वर्षों की परिसमाप्ति से पहले यह दावा करता है।“ सोचों वे अब्दुल-बहा के खून के कितने प्यासे हैं। अपने हृदय में इस वाक्य खण्ड पर मनन करो। मैं और अधिक व्याख्या नहीं कर सकता हूँ और महसूस करो कि इस उद्देश्य के लिए वे कौन सी योजनायें बना रहे हैं। वे और अधिक स्पष्ट रूप से बताने से डरते हैं कि कहीं यह पत्र किसी पराये व्यक्ति के हाथ लग जाये तो उसकी योजनायें विफल न हो जायें। यह वाक्य खंड भविष्य के लिऐ शुभ संदेश है कि इस कार्य के लिए सभी आवश्यक प्रबंध कर दिये गये हैं।

हे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर! तू अपने इस प्रवंचित सेवक को भयंकर शेरों, भूखे भेड़ियों और खूंखार जानवरों के पंजों में जकड़ा हुए देखता है। अपने प्रति मेरे प्रेम के द्वारा कृपापूर्वक मेरी सहायता कर कि मैं उस प्याले को पूरा पी सकूँ जो तेरे प्रति मेरी निष्ठा से छलक रहा है और तेरी अनुकम्पापूर्ण कृपा से लबालब भरा है ताकि मैं अपनी सुधबुध खोकर साष्टांग धूल में लौट जाऊँ और मेरे वस्त्र मेरे खून से रंग

जायें। यही मेरी अभिलाषा है, मेरे हृदय की कामना है, मेरा गौरव है, मेरा यश है। हे स्वामी, मेरे ईश्वर, मेरे आश्रयस्थल, ऐसा कर दे कि जीवन के अंतिम क्षणों में मेरा समय ऐसा हो जैसे सुगन्ध भरी कस्तूरी का। इससे बढ़कर क्या अन्य कोई अनुकम्पा है? नहीं तेरी महिमा की सौंगध। मैं तेरा आह्वान करता हूँ कि तू साक्षी दे कि ऐसा दिन कोई दिन नहीं जाता जब में इस प्यासे से अपना भाग नहीं पाता हूँ। इतने गम्भीर हैं संविदाभंजकों के कुकृत्य, जिन्होंने फूट डाली है, घृणा दर्शाई है, देश में द्रोह फैलाया और तेरे सेवकों के बीच तुझे अपमानित किया है। नाथ! इन संविदाभंजकों से अपने धर्म के शक्तिशाली दुर्ग को बचा और अपने गुप्त आश्रयस्थल की अधर्मियों के आक्रमण से रक्षा कर। तू सत्य ही पराक्रमी, बलशाली, दयालु और शक्तिमान है।

हे तू स्वामी के प्रियजनों! विद्रोह का केन्द्र मिर्ज़ा मुहम्मद अली का ईश्वर के निर्णायक वचनों के अनुसार और अपनी असीम अत्याचारों के कारण घोर पतन हो गया है और वह पवित्र वृक्ष से कट कर गया हैं। वस्तुतः हमने उनके साथ अन्याय नहीं किया है बल्कि उन्होंने स्वयं ही अपने साथ अन्याय किया है।

हे ईश्वर, मेरे परमात्मन्! अपने विश्वसनीय सेवकों की अहम और वासना के आसुरी भावों से रक्षा कर। अपनी स्नेहमयी कृपा के सतर्क नेत्रों द्वारा सभी प्रकार के द्वेष, घृणा और ईर्ष्या से उन्हें बचा और शंका के बाणों से सुरक्षित रखने के लिए उन्हें अपनी सार संभाल के अजेय दुर्ग में आश्रय दे, उन्हें अपने महिमामय चिन्हों के मूर्तरूप बना। अपनी दिव्य एकता के दिवास्रोत से प्रसारित अपनी तेजोमयी किरणों से उनके मुखड़ो को प्रकाशमान कर दे, पावन लोक से प्रकटित श्लोकों से उनके हृदयों को आहलादित कर दे, अपनी महिमा के लोक से आने वाली तेरी सर्वजयी शक्ति द्वारा उनकी कमर को सशक्त बना। तू ही सर्वकृपालु, सर्वरक्षक, सर्वशक्तिमान है।

हे तुम जो संविदा में अडिग खड़े हो। जब वह समय आयेगा कि वह अन्याय पीड़ित और पंख टूटा पंछी स्वर्गिक लोक की और अपनी उड़ान भरेगा और जब वह तीव्रता से अदृश्य लोक की ओर प्रस्थान करेगा और जब उसका भौतिक चोला खो जायेगा, मिट्टी में मिल जायेगा तो अफनानों (टहनियों) के लिए, जो ईश्वर की संविदा में दृढ़ हैं और जो पवित्रता के वृक्ष से प्रभाशित हुए हैं; धर्मभुजाओं के लिए - ईश्वर की महिमा उन पर विराजे और सभी मित्रों एवं प्रियजनों के लिए यह अनिवार्य है कि वे स्फूति से एकजुट होकर ईश्वर की मधुर सुरभि को फैलाने और प्रभुधर्म का शिक्षण करने और उसके धर्म को आगे बढ़ाने के लिऐ प्राणप्रण से उठ खड़े हों। उनके लिए यह अनिवार्य है कि वे क्षण भर को भी विश्राम न करें और न ही रुकें। उन्हें देश विदेश में, हर जलवायु, क्षेत्र और हर प्रदेश में फैल जाना चाहिए। आन्दोलित और अक्लान्त - वे हर देश में यह निनाद कर दें: "हे, तू महिमाओं की महिमा (या बहा-उल-आभा) विश्व में जाहँ भी वे जाएँ वहाँ उन्हें प्रसिद्धि प्राप्त हो, हर सभा में वे दीपक की भाँति जगमगायें। हर सम्मिलन में वे दिव्य प्रेम की ज्योति जला दें जिससे सत्य का प्रकाश विश्व के अन्तर्तम में उदित हो जाये, ताकि पूरे

पूरब और पश्चिम में विशाल जनसमूह ईश्वर की वाणी की छत्रछाया में एकत्रित हो जाये, ताकि पावनता की मधुर सुरभि फैल सके, ताकि मुखड़े दीप्तिमान हो उठें, हृदय दिव्य चेतन से भर सकें, आत्माएँ स्वर्गिक बन जाएँ।"

वर्तमान समय में सभी कार्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है विश्व के राष्ट्रों एवं लागों का मार्गदर्शन, प्रभुधर्म का शिक्षण अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि यह स्वयं नींव की आधारशिला है। इस प्रवंचित सेवक ने अपने जीवन के दिन और रात प्रभुधर्म के उत्थान के लिए और लोगों को प्रभुधर्म की सेवा करने के लिए आग्रह करने में बिताया है। उसने तब तक क्षण भर के लिए भी विश्राम नहीं किया जब तक प्रभुधर्म की प्रसिद्धि देश देशांतर में नहीं गूंज गई और आभा लोक के दिव्य सुरों ने पूरब और पश्चिम के लोंगों को जगा नहीं दिया। ईश्वर के प्रियजनों को भी इसी उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए। यही निष्ठा, स्वामिभक्ति का रहस्य है, यही बहा की पवित्र देहरी पर सेवाभाव के लिए आवश्यक है।

ईसा मसीह के शिष्यों ने स्वंय को और सभी सांसारिक चीजों को भुला दिया। अपनी सभी चिन्ताओं एवं धन सम्पत्ति को त्याग दिया। स्वयं को अहम् और वासना से स्वच्छ की लिया और पूर्ण अनासक्ति के साथ दूर-दूर तक फैल गये और विश्व के लोगों का दिव्य मार्गदर्शन की ओर आह्वान करने में लग गये, जब तक अनन्तः उन्होंने इस संसार को दूसरे संसार में नहीं बदल दिया पृथ्वी के मुखड़े को प्रकाशित नहीं कर दिया। अपनी अंतिम सांस तक उन्होंने उस "प्रभु के प्रियतम" की राह में अपनी त्याग की भावना का प्रमाण दिया। अन्ततः विभिन्न भू-भागों में उन्होंने महिमामय वीरगति प्राप्त की। वे जो कर्मवीर हैं, उन्हें ऐसे ही शहीदों के पदचिन्हों पर चलना चाहिये।

हे मेरे मित्रों! इस प्रवंचित की मृत्यु के बाद पवित्र कल्पवृक्ष के अग़सानों (शाखाओं), अफनानो (टहनियों) और धर्मभुजाओं (स्तम्भों) के लिए अनिवार्य है कि वे शोग़ी एफेन्दी, जो दो पवित्र और पावन वृक्ष से प्रभासित युवा शाखा और पवित्रता के वृक्ष की दो टहनियों के मिलन से उत्पन्न फल हैं, की ओर उन्मुख हों क्योंकि वह ईश्वर का चिन्ह और चुनी हुई शाखा, प्रभुधर्म के संरक्षक हैं, जिसकी ओर सभी अग़सानों, अफनानों, धर्मभुजाओं और बहाउल्लाह के प्रियजनों को अवश्य ही उन्मुख होना चाहिए, वह प्रभु की वाणी के व्याख्याता हैं और उनके बाद उनके प्रत्यक्ष वंशजों से उत्पन्न ज्येष्ठ संतान उनकी उत्तराधिकारी बनेगी। प्रभुधर्म के संरक्षक वह, पवित्र युवा शाखा और विश्व न्याय मन्दिर, जिसका निर्वाचन सार्वभौमिक रूप से होगा, दोनों ही आभा-सौन्दर्य की सार सम्भाल और सुरक्षा के अंतर्गत हैं और उस परम पावन, परम उदात्त ईश्वर, मेरा जीवन उन दोनों पर बलिदान हो जाये, की छत्रछाया और अचूक मार्गदर्शन की परिधि में हैं। वे जो भी निर्णय लेते हैं वह ईश्वर का निर्णय है। जो भी उनकी आज्ञा मानता है वह ईश्वर की आज्ञा मानता हैं, जो उनकी आज्ञा नहीं मानता वह ईश्वर का आदेश भंग करता हैं जो भी उनसे विद्रोह करता है, उसने ईश्वर से विद्रोह किया है जो कोई उनका विरोध करता है, वह ईश्वर विरोधी

है। जो कोई भी उनसे विवाद करता है, उसने ईश्वर से विवाद किया है। जो भी उनका प्रतिवाद करता है, उसने ईश्वर का प्रतिवाद किया है। जो भी उन्हें अस्वीकार करता है वह ईश्वर को अस्वीकार करता है। जो उन पर अविश्वास करता है वह ईश्वर पर अविश्वास करता है। जो भी उनके पथ से हटता है, उनसे स्वयं को अलग करता है और उनसे विमुख है, वह सत्य में, ईश्वर के पथ से हटता है, उससे अलग होता है और ईश्वर से विमुख होता है। परमेश्वर का कोप, उसकी प्रतिहिंसा और कहर उस पर बरसे। महानतम दुर्ग उनके आज्ञापालन से ही सुरक्षित और अजेय रहेगा जो प्रभुधर्म से संरक्षक हैं। विश्व न्याय मन्दिर के सदस्यों, सभी अग़सान, अफनान, धर्मभुजाओं के लिए यह अनिवार्य है कि वे प्रभुधर्म के संरक्षक के प्रति अपना आज्ञापालन, समर्पण, अधीनता प्रदर्शित करें और उसके समक्ष विनम्रता प्रदर्शित करें। जो उनका विरोध करता है वह सत्य परमेश्वर का विरोध करता है और वह प्रभुधर्म में विभेद उत्पन्न करेगा। वह उसकी वाणी को विकृत करके प्रस्तुत करने वाला और विभेद का मूर्तिमान केन्द्र होगा। सावधान! सावधान!! कहीं बहाउल्लाह के महापरिनिर्वाण के बाद की घटनायें फिर से न दुहराई जायें, जब ”विद्रोह का केन्द्र“ अंहकार से फल गया और ”दिव्य एकता“ से स्वयं भी वंचित होकर दूसरों को आकुल-व्याकुल और विषाक्त कर गया। इसमें संदेह नहीं कि हर पाखंडी, जिसका उद्देश्य विभेद उत्पन्न करना है वह प्रकट रूप से अपने घृणित इरादों को नहीं बतायेगा बल्कि मिलावटी सोने की भाँति वह अनेक कारण प्रस्तुत करेगा और विभिन्न बहाने बनायेगा - ताकि वह बहा के लोगों के सम्मिलन को भंग कर सके। मेरे कहने का तात्पर्य यह स्पष्ट करना है कि धर्मभुजाओं को हमेशा सतर्क रहना चाहिए और जैसे ही उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति दिखे जो प्रभुधर्म के संरक्षक का विरोध कर रहा हो तो उसे वे तत्काल बहा के लागों की सभा से निकाल बाहर कर दें और उसका कोई भी बहाना स्वीकार न करें। अनेकों बार घोर विभ्रम को इस प्रकार सत्य का जामा पहनाया गया है ताकि वह मानव हृदय में शंका के बीज बो सके।

हे तुम प्रभु के प्रिय जनों! यह प्रभुधर्म के संरक्षक के लिए अनिवार्य है कि अपने जीवनकाल में ही अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करे जिससे उसके स्वर्गवास के बाद विवाद न उठे। जो भी उत्तराधिकारी नियुक्त किया जाये वह समस्त सांसारिक वस्तुओं से अनासक्त हो, उस पावनता का सार-तत्व हो, वह ईश्वर से भय, ज्ञान, बुद्धिमत्ता और विद्वता प्रदर्शित करे। यदि धर्मसंरक्षक की बड़ी संतान अपने में इन शब्दों की सत्य नहीं प्रकट करे कि ”बालक पिता का गुप्त सार है“, यानि यदि वह अपने पिता से उनकी (धर्मसंरक्षक) आध्यात्मिकता नहीं प्राप्त करता है और उसका चरित्र उसके गौरवशाली वंश की गरिमा के अनुकूल न हो तो वह (धर्मसंरक्षक) किसी अन्य शाखा को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करे।

धर्मभुजाओं को अपने मध्य से नौ व्यक्तियों को चुनना होगा जो हर समय धर्मसंरक्षक के महत्वपूर्ण कार्यों की सेवा में जुटे रहें। इन नौ व्यक्तियों का चुनाव एकमत या बहुमत द्वारा होना चाहिए और इन्हें एकमत या बहुमत से धर्मसंरक्षक द्वारा उनके उत्तराधिकारी की नियुक्ति के प्रति सहमति

प्रकट करनी चाहिए। यह स्वीकृति गुप्त मतदान द्वारा दी जानी चाहिए जिससे स्वीकृति एवं अस्वीकृति के स्वर अगल नहीं किये जा सकें।

हे मित्रों! धर्मभुजाओं का मनोनयन या नियुक्ति प्रभुधर्म के संरक्षक का दायित्व है और उसके द्वारा होनी चाहिए। सभी को उनकी छत्रछाया में रहना चाहिए और उनके आदेशों का पालन करना चाहिए। यदि कोई भी चाहे वह धर्मभुजाओं में से हो या अन्य कोई भी धर्मसंरक्षक की अवज्ञा करता है या फूट डालने की कोशिश करता है तो ईश्वर का कोप और भंयकर प्रतिशोध उस पर टूटेगा क्योंकि वह ईश्वर के सच्चे धर्म में फूट डालने का कारण बना है।

धर्मभुजाओं का अनिवार्य कर्त्तव्य है "दिव्य सुरभि" का प्रसार करना, मनुष्य की आत्माओं का उत्थान करना, ज्ञान का विकास करना, सभी मानवों के चरित्र को उन्नत बनाना तथा हर समय हर परिस्थिति में सांसारिक वस्तुओं से परे पावन और अनासक्त बने रहना। उन्हें चाहिये कि अपने आचरण, अपने व्यवहार, अपने कार्यों और अपने शब्दों से वे ईश्वर के भय की भावना झलकाएँ।

धर्मभुओं की यह संस्था प्रभुधर्म के संरक्षक के मार्गदर्शन के अधीन हैं। धर्मसंरक्षक को चाहिए कि वह निरंतर उन्हें प्रेरित करते रहें कि वे अपनी पूरी क्षमता से प्रभुधर्म की मधुर सुरभि फैलाने और विश्व के सभी मनुष्यों का मार्गदर्शन करने का प्रयत्न करें क्योंकि दिव्य मार्गदर्शन का प्रकाश ही सम्पूर्ण ब्रह्माण को प्रकाशित कर सकता है। इस पूर्ण आज्ञा की क्षण भर के लिए भी अवज्ञा करने की किसी भी प्रकार अनुमति नहीं है ताकि यह संसार आभा स्वर्ग की भाँति बन सके, यह पृथ्वी स्वर्गिक बन सके, ताकि विभिन्न लोगों, राष्ट्रों, जातियों एवं सरकारों के बीच विवाद और झगड़े समाप्त हो सकें ताकि विश्व के समस्त निवासी एक ही राष्ट्र, एक ही जाति, एक ही परिवार की भाँति बन सकें। यदि कभी विभेद उत्पन्न हो जाये तो उन्हें मैत्रीभाव से एकरूप से सर्वोच्च न्यायधिकरण द्वारा सुलझाया जायेगा, जिसके सदस्य सभी सरकारों और देशों से होंगे।

हे तुम प्रभु के प्रियजनों, इस पवित्र युगधर्म में संघर्ष और विवाद करने की किसी भी कीमत पर अनुमति नहीं है। हर आक्रमणकारी स्वयं को ईश्वर की कृपा से वंचित कर लेता हैं यह हर किसी के लिए अनिवार्य है कि वह विश्व के सभी लोगों एवं जातियों के परस्पर अत्यधिक प्रेम सदाचार का स्पष्ट व्यवहार और निष्ठापूर्वक दयालुता का प्रदर्शन करे चाहे वे मित्र हों या अपरिचित हों। (प्रेम और स्नेहिल दयालुता की भावना इतनी प्रबल हो कि अपरिचित अपने को मित्र समझें और शत्रु सच्चा भाई समझें उनके बीच में कोई भी भेदभाव न रहे), क्योंकि सार्वभौमिकता ईश्वर की चीज है और सभी सीमायें सांसारिक चीज हैं। इसलिये मनुष्य को चेष्टा करनी चाहिए कि उसके यथार्थ व्यक्तित्व से गुणों एवं पूर्णता की वह झलक दिखे जिसका प्रकाश सब पर चमके। सूर्य का प्रकाश पूरे संसार पर चमकता है और दिव्य कृपा की करुणामयी बौछार सब पर बरसती हैं जीवनदायी हवा हर प्राणी को पुनर्जीवन देती है और हर कोई जीवन प्राप्त कर इसके स्वर्गिक क्षेत्र से अपना भाग और अपना अंश प्राप्त करता है। उसी प्रकार

एक सत्य ईश्वर के सेवकों का प्रेम और स्नेहिल दयालुता उदारतापूर्वक सार्वभौमिक रूप से समस्त मानवजाति को प्राप्त होनी चाहिए। इस विषय में प्रतिबंध या सीमाएँ स्थापित करने की किसी भी प्रकार अनुमति नहीं है।

इसलिए हे मेरे प्रिय मित्रों! विश्व के सभी राष्ट्रों, जातियों एवं धर्म के लोगों के साथ अत्यधिक सत्यवादिता, सदाचार, निष्ठा, दयालुता, सद्भाव और मित्रता से मिल-जुल कर रहो - ताकि सम्पूर्ण अस्तित्व का जगत बहा ही पवित्र कृपा के परमानन्द से व्याप्त हो जाये, ताकि अज्ञान, शत्रुता, घृणा और मनमुटाव संसार से लुप्त हो जायें और संसार के राष्ट्रों एवं जातियों के मध्य से शत्रुता के अंधकार का स्थान एकता का प्रकाश ले ले। यदि अन्य लोग या राष्ट्र तेरे प्रति निष्ठा न जताएँ तो तू उनके प्रति निष्ठा जता, यदि वे तेरे प्रति अन्याय करें तो तू उनके प्रति न्यायी बन, यदि वे तेरे साथ शत्रुता करें तो तू उनके साथ मैत्री का भाव रख, यदि वे तुझसे अलग-थलग रहें तो तू उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर, यदि वे तेरे जीवन में ज़हर घोलें तो तू उनकी आत्माओं में मिठास भर दे। यदि वे तुझे घाव दें तो तू उनके घावों पर शीतल मरहम बन। ये ही हैं निष्ठावान के गुण, ये ही हैं सत्यवादी के गुण।

और अब उस न्याय मन्दिर के विषय में जिसे ईश्वर ने समस्त शुभ और कल्याण का स्रोत बनाया है और समस्त दोषो से मुक्त कर दिया है। इसका निर्वाचन अवश्य ही सार्वभौमिक स्तर पर यानि बहाइयों द्वारा हो। इसके सदस्यों के लिए यह आवश्यक है कि वे ईश्वर के भय के मूल स्वरूप हों तथा ज्ञान और बोध के प्रभात (अरूणोदय) हों, ईश्वर के धर्म में दृढ़ हों और मानवजाति के हितैषी हों। इस 'मन्दिर' का अर्थ है विश्व न्याय मन्दिर यानि सभी देशों में एक माध्यमिक न्याय मन्दिर की स्थापना होनी चाहिए और ये माध्यमिक न्याय मन्दिर विश्व न्याय मन्दिर के सदस्यों को चुनेंगे। सभी बातें इसी संस्था के समक्ष रखी जानी चाहिए। यह संस्था सभी ऐसे विषयों पर अधिनियम एवं विधान बनायेगी जिनका उल्लेख स्पष्ट रूप से पवित्र ग्रंथ में नहीं है। इस संस्था के द्वारा सभी कठिन समस्याओं के समाधान होंगे और धर्मसंरक्षक इसके पवित्र अध्यक्ष एवं इस संस्था के विशिष्ट आजीवन सदस्य होंगे। यदि वह व्यक्तिगत रूप से इसकी बैठकों में नहीं सम्मिलित होते तो उन्हें किसी को अपने प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त करना होगा। यदि इसका कोई सदस्य ऐसा कार्य करे जो जनहित के विरोध में हो तो धर्मसंरक्षक को उसे अपने विवेक के अनुसार हटा देने का अधिकार है। इसके रिक्त स्थान को भरने के लिए बहाई फिर से मतदान करेंगे। यह विश्व न्याय मन्दिर विधान बनायेगा और सरकार उसे लागू करेगी। विधान मंडल बनाने वाली संस्था द्वारा विधान लागू करने वाली संस्था और इसी तरह विधान लागू करने वाली संस्था सशक्त मजबूत बनेगी और शासन कार्यकारिणी द्वारा विधान बनाने वाली संस्था को शक्ति प्राप्त होनी चाहिये ताकि इन दो शक्तियों की प्रगाढ़ एकता एवं आपसी सहयोग के द्वारा निष्पक्षता और न्यायनिष्ठता की नींव अटल एवं मजबूत बन सके, ताकि विश्व के सभी प्रदेश स्वर्ग के समान बन सकें।

हे नाथ, मेरे परमात्मन् ! अपने प्रियजनों को अपने धर्म में अडिग रहने, अपने पथ पर चलने, प्रभुधर्म में दृढ़ रहने में सहायता दे। उन्हें अपनी कृपा प्रदान कर कि वे अहंकार और वासना के आघातों को सह सकें और तेरे दिव्य मार्गदर्शन का अनुसरण कर सकें। तू शक्तिशाली, कृपालु, स्वयंजीवी, उदात्त, करुणामय, सर्वसमर्थ, सर्वदयालु है।

ओ अब्दुल-बहा के मित्रों! परमेश्वर ने अपनी असीम अनुकम्पाओं के चिन्हस्वरूप अपने सेवकों को एक निर्धारित राशि (हकूकुल्लाह) भेंट करने का अनुग्रह कृपापूर्वक प्रदान किया है जो कर्त्तव्य भावना से उसे भेंट की जानी चाहिये। यद्यपि यह एक सत्य परमेश्वर और उसके सेवक सदा ही समस्त सृजित वस्तुओं से मुक्त रहे हैं और परमेश्वर वस्तुतः सभी चीजों का स्वामी है, वह अपने प्राणियों को किसी भी भेंट की आवश्यकता से परे है लेकिन उस निर्धारित राशि का अपर्ण लोगों को अटल और सुदृढ़ बनने में सहायता करता है और उसकी ओर दिव्य कृपाओं को आकर्षित करता है। यह धर्मसंरक्षक के माध्यम से प्रदान किया जाना चाहिए जिससे इसका उपयोग दिव्य सुरभि फैलाने और ईश्वर के वचनों की महिमा बढ़ाने और जन कल्याण के हित के कार्यों के लिए किया जा सके।

हे तुम प्रभु के प्रियजनों! तुम्हारे लिए यह अनिवार्य है कि तुम सभी न्यायनिष्ठ राजाओं के प्रति नम्र रहो और हर सदाचारी राजा के प्रति निष्ठावान बनो। उनकी सेवा अत्यन्त स्वामिभक्ति और सत्यता से करो। उनके प्रति आज्ञाकारी बनो और उनके शुभचिंतक बनों। उनके आदेश एवं अनुमति के बिना राजनैतिक मामलों में दखल मत दो। क्योंकि न्यायनिष्ठ सम्राट के प्रति निष्ठा न रखने का अर्थ है ईश्वर के साथ विश्वासघात करना।

यह तुम्हारे लिये मेरा परामर्श और ईश्वर का आदेश है। कल्याण हो उनका जो इसका पालन करेंगे।

इस लिखित दस्तावेज को सुरिक्षत रखने की दृष्टि से बहुत दिनों तक भूमिगत रखा गया जिससे इस पर नमी का असर हो गया। प्रकाश में लाने पर यह पाया गया कि इसके कुछ अंश नमी से खराब हो गये थे लेकिन उस समय पवित्र भूमि में भारी उथल-पुथल के कारण इसे ढूंढ़ा नहीं गया।

द्‌वितीय खण्ड

वह परमेश्वर है!

हे मेरे नाथ, मेरे हृदय की आकांक्षा, तू वह है जिसका मैं सदा आह्वान करता हूँ। तू जो मेरा सहायक और आश्रय है, मेरा सम्बल और मेरी शरण है। तू देखता है कि मैं विपत्तियों के एक ऐसे महासागर में डूबा हुआ हूँ जो मेरी आत्मा को विह्वल कर रहा है, ऐसे कष्ट में पड़ा हूँ जो हृदय को दुःखी किये हुए है, ऐसी त्रासदियों से घिरा हूँ जिनसे तेरा अनुयायी विच्छिन्न है और ऐसे रोग और पीड़ाओं से घिरा हुआ हूँ, जिसने तेरे लोगों के समूह को तितर-बितर कर दिया है। दारुण कष्टों ने मुझे घेर लिया है और संकटों ने मुझ पर चारों ओर से आक्रमण कर दिया है। तू देख रहा है कि मैं किस प्रकार अजेय क्लेशों के महासागर में निमग्न हुआ हूँ। अपने शत्रुओं के द्‌वारा पीड़ित हूँ और उनकी घृणा की अग्नि में भस्म हो रहा हूँ, वह आग जो मेरे परिवार के लोगों ने लगाई है, जिनके साथ तूने अपनी अटल संविदा और अटल इच्छापत्र/वसीयत स्थापित की थी, जिसमें तूने उन्हें आदेश दिया था कि वे इस प्रवंचित की और अपना हृदय उन्मुख करें, मूर्ख, अन्याय-पीड़ितों को मुझसे दूर रखें और इस एकाकी के समक्ष तेरे पवित्र ग्रंथ उन सभी बातों को प्रस्तुत करें जिसके विषय में उनमें आपस में मतभेद हो ताकि उनके समक्ष सत्य प्रकट हो सके, उनकी शंकायें समाप्त हो सकें और तेरे प्रकट चिन्हों का देख-देशांतर में प्रसार हो सके। हे नाथ तू मुझे अपने कभी न सोने वाले नेत्रों से देख रहा है कि फिर भी उन्होंने किस प्रकार तेरी संविदा को तोड़ दिया है और तुझसे विमुख हो गये हैं। किस प्रकार घृणा एवं विद्रोह की भावना से भरे हुए वे तेरे इच्छापत्र से भटक गये हैं और द्‌वेष के प्रेरित होकर वे तेरे विरोध में उठ खड़े हुए हैं।

जब उन्होंने अपने संदेहों की पट्‌टिका का देश-देशांतर में प्रचार किया, धोखाधड़ी भरे झूठे आरोपों के वार मुझ पर करते गये और असहनीय क्रूरता से मुझे दबाकर कुचल देने के लिए उठ खड़े हुए तो दुर्भाग्य और भी प्रचंड वेग से मुझ पर टूट पड़ा। जब इससे भी वे संतुष्ट नहीं हुए तो हे मेरे परमेश्वर! उनके मुखिया ने तेरे ग्रंथ की झूठी व्याख्या करने तक का भी साक्ष्य किया और उसने तेरे पावन ग्रंथ में क्षेपक जोड़े और कितनी मक्कारी से तेरे निर्णायक पवित्र लेखनी का अर्थांतर किया और तेरी सर्वमहिमामय लेखनी से रचे गये श्लोंको को झूठा करार दिया। उसने दुर्भावना से उनमें वे श्लोक डाल दिया जो तूने उसके लिए प्रकट किये थे जिससे वि तेरे ऊपर घोर अत्याचर किया था, तुझमें अविश्वास किया था और तेरे उन अद्‌भूत चिन्हों को अस्वीकार किया जो तूने अपने इस सेवक के लिए प्रकट किये थे जो इस संसार के अत्याचारों से पीड़ित था। यह सब उसने इसलिये किया था कि शायद वह मनुष्यों की आत्माओं को बहका सके और तेरे भक्तों के हृदय में अपनी दुर्भावनाएँ भर सके। उसके बाद उसके दूसरे मुखिया ने अपनी हस्तलिपि में उसे स्वीकार करते हुए इसे प्रमाणित किया और तब अपनी मुहर लगाकर सभी क्षेत्रों में भेजा। हे मेरे नाथ! क्या इससे भंयकर भी कोई और अन्याय हो सकता है? और तब भी वे रुके नहीं और ढ़िठाई से झूठ एवं बदनामी, अपमान तथा मिथ्या विचारों सहित, तिरस्कार एवं लांक्षना के

साथ प्रयत्नशील रहे कि इस देश की एवं अन्य देशों की सरकारों के मध्य विद्रोह फैल जाये और ये सरकारें मुझे विद्रोह के बीज बोने वाला समझें। लोगों के दिमागों में ऐसी बातें भर दीं जो सुनने में भी घृणित हो। सरकार सावधान हो गई। सम्राट भयग्रस्त हो गये और मेरी कुलीनता पर शक पैदा हो गया। मन कठिनाइयों में पड़ गये। कामकाज अस्तव्यस्त हो गया, आत्मायें व्याकुल हो उठीं। पीड़ा और दुःख की अग्नि सभी के हृदय में भड़क उठीं, पवित्र पातें, पवित्र परिवार की स्त्रियाँ मूर्छित हो गईं। उनके हृदय हिल गये, उनकी आँखों से आँसुओं की वर्षा होने लगी, उनकी आहें और विलाप तेज हो गये और उनके हृदय यह देखकर दग्ध हो गये कि तेरी चाह के कारण अत्याचार से पीड़ित सेवक अपने परिवारजनों में ही अपने शत्रुओं के हाथों का शिकार बन गया है।

नाथ तू देख रहा है कि सभी चीजें मेरे हाल पर रो रही हैं और मेरे परिवार के लोग मुझे कष्टों में देखकर आनन्द मना रहे हैं। तेरी महिमा की सौगंध! हे मेरे नाथ, मेरे ईश्वर, मेरे शत्रुओं में से भी कुछ ने मेरे दुःखों एवं कष्टों पर विलाप किया है और ईर्ष्यालुओं में से भी कइयों ने मेरी चिंताओं, निर्वासन और मेरे कष्टों पर आँसू बहाये हैं क्योंकि उन्हें मुझमें प्रेम और अपनेपन के सिवा कुछ नहीं मिला, स्नेह और दया के सिवा और कुछ नहीं दिखलाई दिया। जब उन्होंने मुझे विपदाओं एवं कष्टों के सैलाब झेलते देखा, मुझे दुर्भाग्य के तीरों का शिकार बना पाया तो उनके हृदय करुणा से द्रवित हो गये और उनकी आँखें आँसुओं से भीग गई। तब उन्होंने घोषणा करके यह प्रमाणित किया कि प्रभु हमारा साक्षी है कि हमने उसमें प्रतिनिष्ठा, उदारता और परम करुणा के सिवा और कुछ नहीं पाया तथापि संविदा भंजकों ने - वे जो दुष्कर्मो के प्रणेता हैं - अपनी शत्रुता की आग को भी प्रज्वलित किया और जब मैं भंयकर कठिनाइयों से घिर गया तो उन्होंने खुशियाँ मनाई, वे मेरे विरोध में उठ खड़े हुए और मेरे चारों ओर घट रही मर्मभेदी घटनाओं पर हर्षोन्मादित हुए।

हे मेरे नाथ! मेरे परमात्मन्! में अपनी जिह्वा से, अपने पूरे हृदय से तुझसे विनती करता हूँ कि तू उनकी क्रूरता, उनके दुष्कर्मो, उनके कलह और उनकी दुष्टताओं के लिए उनसे प्रतिशोध मत ले क्योंकि वे मूर्ख और अभद्र हैं और नहीं जातने हैं कि वे क्या कर रहे हैं। वे पुण्य और पाप का अन्तर नहीं समझते हैं और न ही वे सही और गलत, न्याय और अन्याय के बीच भेद कर सकने में समर्थ हैं। वे अपनी ही इच्छाओं का अनुसरण करते हैं। हे मेरे नाथ! उन पर दया कर। इस कठिन घड़ी में समस्त विपत्तियों से उनकी रक्षा कर और सभी संकट और कठिनाइयाँ अपने इस सेवक के भाग्य में लिख दे जो इस अंधेरे गह्वर में पड़ा हुआ है। मुझे हर दुःख दे और अपने प्रियजनों के लिए मेरा बलिदान ले ले। हे नाथ, हे सर्वोच्च! मेरी आत्मा, मेरा जीवन, मेरा अस्तित्व, मेरी चेतना, मेरा सब कुछ उनके लिए बलिदान हो जाये। हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! अति विनीत, याचनारत, मुंह के बल गिरा हुआ मैं तुझसे अपने आह्वान की पूरी शक्ति के साथ तुझसे मांगता हूँ कि तू उसको क्षमा कर दे जिसने मुझे चोट पहुँचाई है, जिसने मेरे विरूद्ध षडयंत्र रचा है और मेरा तिरस्कार किया है उन्हें अपने उत्तम उपहार प्रदान कर, उन्हें आनन्द दे,

दुःखों से मुक्त कर, उन्हें शांति और समृद्धि प्रदान कर, अपना आशीर्वाद प्रदान कर और उन पर अपनी अनुकम्पा बरसा।

तू शक्तिमान, कृपालु, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी है।

हे परमप्रिय बंधुओं! मैं अभी महान खतरे में हूँ और घंटे मात्र के जीवन की भी उम्मीद खो चुका हूँ। अतः प्रभुधर्म की सुरक्षा और उसके विधानों को बचाये रखने, उसके वचनों की सुरक्षा और उसकी शिक्षाओं को बचाने के लिए मैं इन पंक्तियों को लिपिबद्ध करने के लिए बाध्य हूँ। पुरातन सौन्दर्य की सौंगध! यह प्रवंचित किसी भी प्रकार किसी के लिए भी ईर्ष्या की भावना नहीं रखता है और न ही किसी के प्रति कोई दुर्भावना ही रखता है और वह जो भी बोलता है बस विश्व के कल्याण के लिए ही बोलता है। लेकिन मेरा सर्वोच्च अनिवार्य कर्त्तव्य मुझे बाध्य करता है कि मैं प्रभुधर्म का संरक्षण करूँ। अतः मैं विवश होकर तुम्हें यह कहते हुए सलाह देता हूँ कि तुम प्रभुधर्म की रक्षा करो, उसके विधानों की सुरक्षा करो और आपसी फूट से डरो - यही बहा के लोगों की नींव है, मेरा जीवन उन पर न्योछावर हो जाये। परम पावन परम उदात्त दिव्यात्मा बाब ईश्वर की एकता एवं एकमेवता के अवतार हैं और पुरातन सौन्दर्य के अग्रदूत हैं। परम पावन आभा-सौन्दर्य, मेरा जीवन उनके अडिग मित्रों पर न्योछावर हो जाये, वे ईश्वर के सर्वोच्च अवतार हैं और उसके परम दिव्य सार के दिव्य प्रभात है, अरुणोदय हैं। अन्य सभी उनके सेवक हैं और उनके आदेशो का पालन करते हैं। परम पावन पुस्तक की ओर सभी का उन्मुख होना चाहिए और जो भी उसमें स्पष्ट रूप से अंकित नहीं हो उसे स्पष्टीकरण के लिए विश्व न्याय मन्दिर के समक्ष रखा जाना चाहिए और यह संस्था एकमत या बहुमत से जो भी स्वीकार करेगी वह निर्णय वस्तुतः सत्य और स्वयं ईश्वर का उद्देश्य होगा। जो भी उससे हटता है वह उनमें से हैं जिन्हें फूट प्रिय है, उसने शत्रुता दिखलाई है और संविदा के स्वामी से दूर हो गया है। इस न्याय मन्दिर से अभिप्राय है - विश्व न्याय मन्दिर का जो पश्चिम और पूर्व के उन सभी देशों से निर्वाचित होगा जिनमें बहा के प्रियजन निवास करते हैं। यह चुनाव प्रक्रिया वैसे ही सम्पन्न होगी जिस प्रकार पश्चिमी देशों जैसे इंग्लैंड में निर्वाचन की रीति है।

विश्व न्याय मन्दिर के सदस्यों का यह अनिवार्य कर्त्तव्य है कि वे एक निर्धारित स्थान पर एकत्रित होकर उन सभी समस्याओं पर विचार करें जो विभेद का कारण हैं और उन प्रश्नों पर परामर्श करें जो अस्पष्ट हैं और उन विषयों पर ध्यान दे जिनका पवित्र ग्रंथ में स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं है वे जो भी निर्णय लेते हैं वह उतना ही प्रभावशाली है जितना पवित्र ग्रंथ का और क्योंकि इस न्याय मन्दिर को अधिकार है कि उन विषयों पर विधान बनाये जिनका पवित्र ग्रंथ में स्पष्ट उल्लेख नहीं है और जिनका प्रभाव दैनन्दिन के क्रिया-कलापों पर पड़ता है। अतः उसे विधानों को रद्द करने का भी अधिकार है। उदाहरण के लिए विश्व न्याय मन्दिर ने आज कोई विशेष विधान बनाया है और उसे लागू करता है और आज से 100 वर्षों के बाद परिस्थितियाँ पूरी तरह से बदल जाती हैं तो तत्कालीन समय की आवश्यकता के अनुसार विधान को बदलने का उसे अधिकार है। तत्कालीन विश्व न्याय मन्दिर को ऐसा करने का

अधिकार इसलिये है कि वह विधान दिव्य प्रमाणित लेखनी का हिस्सा नहीं है। विश्व न्याय मन्दिर स्वयं अपने विधानों का निर्माता और रद्द करने वाला है और जब प्रभुधर्म का एक सर्वाधिक महान, सर्वाधिक मौलिक सिद्धान्त है संविदा भंजकों का पूर्णतया बहिष्कार करना और उनकी संगति का भी परित्याग करना क्योंकि वे प्रभुधर्म का सर्वनाश कर देंगे, उसके विधानों को आमूल उखाड़ फेंकगे। अतीत में किये गये कार्यों का कोई प्रतिदान नहीं मिलेगा। ओ मित्रों! तुम्हारा यह कर्त्तव्य है कि संवेदनशील हृदय से परम पावन, परम उदात्त के कष्टों पर विचार करो और उस सदा आशीर्वादित सौन्दर्य के प्रति निष्ठा प्रकट करो। प्रचुर प्रयत्न किये जाने चाहिए ताकि ये सभी आपदायें, कष्ट और विपत्तियाँ और ईश्वर की राह में पानी की तरह बहाया गया शुद्ध और पवित्र रक्त व्यर्थ न चला जाये। तुम यह भलीभाँति जानते हो कि विद्रोह के केन्द्र मिर्ज़ा मुहम्मद अली और उसके साथियों ने क्या कुछ बुरा नहीं किया। उसके कुकर्मों में एक है पवित्र लेखों को भ्रष्ट करना जिसके विषय में तुम सबको अच्छा ज्ञान है, परमेश्वर की जय हो, और यह भी जानते हो कि यह उसके अपने ही भाई मिर्ज़ा बदीउल्लाह ने इस बात को अपनी ही हस्तलिपि में अपनी मुहर लगाकर अपने बयान स्वरूप उसे दूसरे देशों में प्रसारित करके स्पष्ट रूप से अपनी करनी को प्रमाणित और सिद्ध किया। यह उसके दुष्कर्मों में मात्र एक दुष्कर्म है। क्या ईश्वरीय ग्रंथ में क्षेपक (मनगढ़न्त बातें जोड़ने) डालने से बढ़कर भी कोई अन्य पथ भ्रष्टता हो सकती है? ईश्वर की न्यायनिष्ठा की सौगंध! कदापि नहीं। उसके सभी अत्याचार एक पुस्तिका में अंकित हैं। ईश्वर करे तुम उस पर ध्यान दो।

संक्षेप में, प्रमाणित दिव्य लेखनी के अनुसार इसका रंच मात्र भी उल्लंघन इस आदमी को निकृष्ट बना देता है और दिव्य महल को नष्ट करने की कोशिश करने, संविदा तोड़ने, ईश्वरीय इच्छापत्र से दूर भटकने, पवित्र ग्रंथ के साथ जालसाजी करने, संदेह के बीज बोने, अब्दुल-बहा को खत्म करने के लिए षडयंत्र रचने जैसे झूठे दावे करना जिन्हें ईश्वर ने प्रमाणित नहीं किया हो, उपद्रव की चिंगारी लगाने और अब्दुल-बहा का खून तक बहाने की कोशिश करने और ऐसे अनेक कार्य करना जिनके विषय में तुम सब जानते हो, से बढ़कर गम्भीर अत्याचार और क्या हो सकते हैं? यह स्पष्ट है कि यदि यह आदमी प्रभुधर्म में विघटन लाने में सफल हो जाये तो वह इस धर्म का सर्वनाश करके इसे जड़ से उखाड़ देगा। सावधान रहो कि कहीं तुम उसके पास न फटको क्योंकि इसकी निकटता आग की निकटता से भी खतरनाक है, बदतर है।

हे कृपालु ईश्वर! जब मिर्ज़ा बदीउल्लाह ने अपनी ही हस्तलिपि में यह गवाही दी कि यह आदमी (मुहम्मद अली) ने संविदा को तोड़ी है और साथ ही उसने पवित्र ग्रंथ के साथ जालसाजी की है तब उसे यह महसूस हुआ कि सत्यधर्म में वापस आने और संविदा और इच्छापत्र के साथ वफादारी से उसकी स्वार्थी इच्छाओं को पूरा करना कभी सम्भव नहीं होगा। अपने किये पर पश्चाताप और खेद हुआ और तब उसने उसे अपने लिखित बयान को गोपनीय रूप से एकत्रित करने का प्रयास कराने, विद्रोह के केन्द्र के

साथ मिलकर गुप्तरूप से मेरे विरूद्ध षडयंत्र रचा और मेरे घर के अन्दर की सभी गतिविधियों के विषय में उसे सूचना देने लगा। बाद में किये गये अनिष्टकारी कार्यों में भी उसका मुख्य हाथ था। परमेश्वर की जय हो कि दिनचर्या में फिर से पहले जैसी स्थिरता आ गई है और प्रभु के प्रियजनों के मन को थोड़ी शांति प्राप्त हुई है लेकिन जिस दिन से वह फिर से हमारे बीच आया है उसने फिर से घोर द्रोह के बीज बोना प्रारम्भ कर दिया है। उसके कुछ षडयंत्रों एवं साजिशों की चर्चा एक अलग पत्र में की जाएगी।

मेरा उद्देश्य यह बतलाना है कि जो संविदा और विधानों में दृढ़ हैं उन मित्रों के लिए यह आवश्यक है कि जब यह प्रवंचित न रहें तब वैसे विघटनकारी तत्वों के प्रति सजग रहें और उनकी संगति का बहिष्कार करें जो भ्रम और विद्रोह के बीज बोकर प्रभुधर्म को जड़ से नष्ट करने की कुचेष्टा करें। उनकी साथ-संगति से कोसों दूर रहें। इस बात को समझें और चौकस रहें, सजग रहें और उन्हें परखें कि कोई प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से थोड़ा भी उनसे सम्बन्ध रखे तो उसे अपने बीच से निकाल दें, क्योंकि निश्चय ही वह विघटन और हानि पहुँचाने की कोशिश करेगा।

हे तुम परमेश्वर के प्रियजनों! अपने पूरे दिलो-जान से प्रभुधर्म को कपटियों के आक्रमण से बचाने का प्रयास करो, क्योंकि ऐसी आत्माएँ सीधे को टेढ़ा बनने एवं सभी परोपकारी कार्यों के विपरीत परिणाम उत्पन्न करने को बाध्य करती हैं।

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! मैं तेरा, तेरे अवतारों और संदेशवाहकों का, तेरे संतों और तेरे पावन जनों का आह्वान करता हूँ, इसकी साक्षी देने के लिए कि मैंने तेरे प्रियजनों के समक्ष तेरे प्रमाणों को सम्पूर्ण रूप से घोषित किया है और सभी चीजें स्पष्ट रूप से उनके समक्ष रखी हैं ताकि वे तेरे धर्म की देखभाल कर सकें, तेरे सीधे पथ की सुरक्षा कर सकें और भव्य विधान का संरक्षण कर सकें। तू सत्य ही सर्वज्ञ, सर्वबुद्धिमान है।

तृतीय खण्ड

वह साक्षी है, सर्वपरिपूरक है!

हे मेरे ईश्वर! मेरे प्रियतम, मेरे हृदय की आकांक्षा! तू जानता है, तू देखता है वह जो तेरे इस सेवक पर बीत रहा है, जो तेरे द्वारा विनत है और तू जानता है कि उसके विरूद्ध उन विद्वेषियों ने कैसे पापकर्म किये हैं जिन्होंने तेरी संविदा तोड़कर तेरे इच्छापत्र से मुख मोड़ लिया हैं दिन में तो उन्होंने घृणा के बाणों से मुझे कष्ट पहुँचाए और रात में छिपकर मुझे क्षति पहुँचाने के षडयंत्र रचे। प्रभात बेला में उन्होंने वह किया जिसे देखकर दूवदूतों का समूह विलाप करने लगा और रात को मेरे विरुद्ध उन्होंने अपनी अत्याचार की तलवारें निकाली और दुष्ट नास्तिकों की उपस्थिति में झूठे आरोपों की बरछियों से मुझे बेधा। उनके दुष्कर्मो के बावजूद तेरा यह अकिंचन सेवक धैर्यवान बना रहा जबकि तेरी शक्ति और सामर्थ्य के सहारे वह उनके वचनों को नष्ट कर सकता था, उनके द्वारा प्रज्वलित अग्नि को बुझा सकता था और उनके विद्रोह की लपट को रोक सकता था।

तू देख रहा है, हे मेरे ईश्वर! दीर्घकाल तक अत्याचार झेलने तथा मेरी चिर सहनशीलता एवं मौन ने उनकी क्रूरता, उनकी धृष्टता, अहंकार और उनके अभिमान को बढ़ा दिया है। तेरी महिमा की सौंगध, हे मेरे प्रियतम! उन्होंने तुझ पर अविश्वास किया है और तेरे प्रति ऐसा विद्रोह किया है कि मुझे एक पल के लिए भी चैन और शांति नहीं हुई कि मैं मानवजाति के मध्य समुचित रूप से तेरी वाणी की महिमा गा सकूँ और आभालोक के निवासियों के आनन्द से छलकते हृदय के साथ तेरी पावन देहरी पर सेवा कर सकूँ।

हे नाथ मेरी विपत्तियों का प्याला लबालब भर चुका है और सभी दिशाओं से मुझ पर भीषण आक्रमण हो रहे हैं। विपत्ति के बाणों ने मुझे चारों ओर से घेर लिया है और मुझ पर कष्टों के तीर बरस रहे हैं। इस प्रकार कष्टों ने मुझे विह्वल कर डाला है और मैं जो अपने दुःखों के बीच अकेला त्यक्त खड़ा रहा, उसकी शक्ति अंदर की अंदर निर्बल बनकर रह गई है। हे नाथ! मुझ पर दया कर, मुझे अपने पास बुला ले और मुझे शहादत के पात्र से पीने दे क्योंकि यह विस्तृत संसार अपनी पूरी विशालता के साथ भी मुझे अपने में समाहित नहीं कर सकता। तू वस्तुतः दयालु, करूणामय, कृपालु और सर्व अनुग्रहकारी है।

हे तुम इस प्रवंचित के सत्य, निष्ठावान, स्वामिभक्त मित्रों! तुम में से प्रत्येक जानता है और विश्वास करता है कि इस अत्याचार पीड़ित कैदी पर कौन-कौन सी विपत्तियाँ आन पड़ी हैं। उनकी करतूतों के कारण जिन्होंने ऐसे समय में संविदा का खण्डन किया जब कि विश्व का सूर्य अस्त हो गया था और मेरा हृदय उसके वियोग की आग से जल रहा था।

सत्य के सूर्य के अस्त होने के कारण जब विश्व के हर भाग में ईश्वर के शत्रुओं को लाभ पहुँच रहा था ऐसे समय में और इतने महान संकटों के बीच अचानक और अपनी पूरी शक्ति के साथ संविदाभंजक

सत्याधिक क्रूरता के साथ हानि पहुँचाने और शत्रुता की भावना को भड़काने के लिए उठ खड़े हुए। हर क्षण उन्होंने एक दुष्कर्म किया और भंयकर द्रोह के बीज बोने तथा संविदा के भवन को नष्ट करने में वे क्रियाशील रहे। लेकिन इस प्रवंचित कैदी ने उनके दुष्कर्मो को छिपाने और उन पर पर्दा डालने की भरपूर कोशिश की ताकि शायद कहीं वे ग्लानि प्रकट करें और पश्चाताप से भर जाएँ। लेकिन इन दुष्कर्मो के प्रति उसकी सहनशीलता तथा दीर्घकाल तक अत्याचार झेलने से और भी अंहकारी और उद्दंड बन गए और अन्ततः उन्होंने अपने हाथों से लिखे गये पर्चों द्वारा शंका का बीजारोपण किया। अपने ही हाथों से एक पर्चे में शंका के बीज भर कर उसे छपवाकर विश्वभर में प्रसारित किया - इस विश्वास के साथ कि उनके ऐसे मूर्खतापूर्ण कार्य से संविदा और इच्छापत्र विनष्ट हो जायेंगे।

तब महानतम आत्मविश्वास और धैर्य तथा दिव्य साम्राज्य की शक्ति, स्वर्गिक करूणा, अचूक सहायता और दिव्य कृपा से सहायता पाकर परमेश्वर के प्रियजन उठ खड़े हुए और उन्होंने डटकर शत्रुओं का मुकाबला किया। पवित्र लेख के लगभग सत्तर वक्तव्यों, निर्णायक प्रमाणों, अचूक साक्ष्यों और स्पष्ट लेखों की सहायता से उन्होंने संविदाभंजकों के संशयजनक पत्रों एवं उपद्रवकारी पर्चों का खंडन किया। इस प्रकार विद्रोह का केन्द्र अपने ही छल कपट के जाल में फंस कर ईश्वर के कोप से पीड़ित हुआ और घोर अपमान एवं अप्रतिष्ठा में डूब गया जो सर्वनाश के दिन तक कायम रहेगा। भंयकर हानि के शिकार इन दुष्कर्मियों की स्थिति निकृष्ट ओर दुर्भाग्यपूर्ण है।

और जब वे पराभूत हो गए, प्रभु के प्रियजनों के विरूद्ध अपने प्रयासों की निष्फलता से निराश हो गए, उन्होंने जब प्रभु के इच्छापत्र की ध्वजा को विश्व के सभी क्षेत्रों में फहराते देखा और तब उन्होंने सर्वकृपालु की संविदा की शक्ति का अनुभव किया तो उनके हृदय में ईर्ष्या की ऐसी आग भड़की जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। पूरी शक्ति से प्रयत्नशील होकर ईर्ष्या और शत्रुता से भरे उन लोगों ने दूसरा रास्ता अख्तियार किया और एक नये षडयंत्र को रचने में लग गए। सरकार और शाह के दिलों दिमाग में विद्रोह की अग्नि भड़काने के षड़यंत्र में, ताकि यह लगे कि यह प्रवंचित कैदी ही विद्रोह का मूल है, सरकार का विरोधी है और शाह का शत्रु है। ताकि शायद इससे अब्दुल-बहा को मृत्यु दण्ड मिल जाये और उनका नामोनिशान मिट जाये। ताकि संविदा के शत्रुओं के लिए एक नया मोर्चा खुल जाये जहाँ से वे आगे बढ़ कर आक्रमण कर सकें, हर किसी को घोर क्षति पहुँचा सकें और प्रभुधर्म के भव्य भवन की नींव को ही धराशाही कर दें, क्योंकि उन झूठे लोंगों का व्यवहार ऐसा है कि वे पवित्र वृक्ष की जड़ को काटने वाली कुल्हाड़ी की भाँति बन गये हैं। यदि इन्हें रोका नहीं गया तो वे कुछ ही दिनों में प्रभुधर्म एवं ईश्वरीय वाणी और स्वयं को भी जड़ से समाप्त कर देंगे।

इसलिए ईश्वर के प्रियजनों के लिए अनिवार्य है कि वे उनका पूर्णतया बहिष्कार करें, उनसे दूर रहें, उनके षड़यंत्रों एवं झूठे अफवाहों को निरस्त कर दें, ईश्वरीय विधान की रक्षा करें और हर कोई परमेश्वर की मधुर सुरभि के व्यापक प्रसार में लग जाए तथा जी जान से ईश्वरीय शिक्षाओं के प्रसार में

जुट जायें। यदि कोई भी व्यक्ति या व्यक्ति-समूह ईश्वर के प्रकाश के प्रसार में बाधक बने तो प्रभु के प्रियजनों को उन्हें समझाना चाहिए और कहना चाहिए: ”ईश्वर द्वारा दिये गये उपहारों में सबसे महान उपहार है प्रभुधर्म का शिक्षण। यह हमारी ओर ईश्वरीय अनुग्रह आकर्षित करता है और यही हमारा प्रथम अनिवार्य कर्त्तव्य है। ऐसे उपहारों से हम भला स्वयं को कैसे वंचित कर सकते हैं? नहीं, हम अपना जीवन, अपनी सम्पत्ति, अपना सुख-चैन, अपना आराम, अपना सबकुछ आभा सौन्दर्य पर न्योछावर कर प्रभुधर्म का शिक्षण करेंगे।“ लेकिन जैसा कि पवित्र ग्रंथों में भी लिखा है, सावधानी और दूरदर्शिता बरती जानी चाहिये। आवरण को अचानक छिन्न-भिन्न नहीं कर देना है। महिमाओं की महिमा तुम पर विराजमान हो!

ओ तुम अब्दुल-बहा के वफादार प्रियजनों! तुम्हारा यह अनिवार्य कर्त्तव्य है कि तुम शोग़ी एफेन्दी का पूरा और विशेष ध्यान रखो, जो दो पवित्र कल्प वृक्षों के फल से उत्पन्न हुए हैं, ताकि शोक और विषण्णता की धूल, उनकी दीप्तिमान प्रकृति पर धब्बा न लगाने पाये, ताकि वह दिन-प्रतिदिन आनन्द, हर्ष एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण हो और फलों से लदे हुए एक वृक्ष की भाँति बन जाएँ।

क्योंकि वह अब्दुल-बहा के बाद प्रभुधर्म के संरक्षक हैं, अतः अफनान, सभी धर्मभुजा (स्तम्भ) और ईश्वर के प्रियजन अवश्य ही उनकी आज्ञा का पालन करें और उनकी ओर उन्मुख हों। जो उनकी आज्ञा का पालन नहीं करता उसने ईश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया है, जो उनसे दूर चला गया है, वह ईश्वर से भी दूर चला गया है, जो उनसे विमुख हुआ है, वह ईश्वर से विमुख हुआ है और जिने भी उन्हें अस्वीकार किया है, उसने एकमेव सत्य ईश्वर को अस्वीकार कर दिया है। सावधान, कहीं कोई इन शब्दों का गलत अर्थ न निकाले और उनकी भाँति न बने जिन्होंने बहाउल्लाह के स्वर्गारोहरण दिवस के बाद संविदा का खण्डन किया, कपट को बढ़ावा दिया, विद्रोह का ध्वज फहराया, हठ किया और झूठी व्याख्याओं के द्वार खोल दिये। किसी को भी अपना विचार, अपना निश्चय थोपने का अधिकार नहीं दिया गया है। सभी को प्रभुधर्म के केन्द्र अथवा विश्व न्याय मन्दिर से मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए। और जो किसी अन्य की ओर उन्मुख होता है वह सत्य ही भंयकर भूल करता है।

महिमाओं की महिमा तुम पर विराजमान हो!

* * *